International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 142-146

भारत में आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महिला उद्यमी की भूमिका एवं चुनौतियॉं

डॉ. पिंकी कुमारी*

सार

आज महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे हैं चाहे वह मेडिकल क्षेत्र हो, इन्जिनियरिंग क्षेत्र, वैज्ञानिक क्षेत्र, शिक्षा क्षेत्र, कानून क्षेत्र, सभी सेना क्षेत्रों में, प्रशासनिक क्षेत्र और सभी क्षेत्रों में। उद्यमिता का क्षेत्र ही महिलाओं से परे था लेकिन यह क्षेत्र भी अब महिलाओं के कब्जे में है। महिला उद्यमिता आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण व क्रान्तिकारी घटना है। 21वीं शताब्दी में महिलाएँ जागरूक, शिक्षित एवं आत्मनिर्भर बन रही हैं तथा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समस्त क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता प्रदान कर रही हैं। प्रस्तुत शोध लेख में उद्यमिता क्षेत्र में महिला उद्यमियों को कौन–2 सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है तथा देश की आर्थिक प्रगति में महिला उद्यमिकी भूमिका का अध्ययन किया गया है।

शब्दकोशः *महिला, उद्यमिता, उद्यमी।*

प्रस्तावना

आज वर्तमान में पुरूष एवं महिलाओं में लिंग के आधार पर कोई भेद नहीं है। पहले महिलाएँ केवल घरेलू क्रियाओं में ही संलग्न थीं। लेकिन जैसे–2 परिवर्तन हुआ महिलाएँ घर से निकल कर बाहर आ गईं। आज महिलाओं का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में आज महिला ने उद्यमिता को अपने पेशे के रूप में एक नया क्षेत्र विकसित किया है। मानव विकास निर्माण में महिलाओं का विकास एवं सशक्तिकरण साथ जुड़े हुए हैं, जो एक स्वतंत्र समूह के रूप में भारत की कुल आबादी का लगभग 48.2 प्रतिशत हिस्सा बनाती हैं। महिलाएँ एक मूल्यवान मानव संसाधन हैं और उनका सामाजिक व आर्थिक विकास अर्थव्यवस्था की स्थायी वृद्धि के लिए अनिवार्य है। फिर भी उद्यमिता क्षेत्र में महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

उद्यमिता

उद्यमिता वह प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अपने वातावारण में उपलब्ध अवसरों की खोज करता है तथा उनका विश्लेषण करके आवश्यक संसाधनों को प्राप्त कर संगठन का निर्माण एवं संचालन करता है तथा जोखिम वहन करता है ताकि समाज की अपेक्षाओं आवश्यकताओं को संतुष्ट कर लाभ अर्जित किया जा सके।

इन्ट्रीप्रीन्यूर शब्द फ्रेंच शब्द एन्टरप्रेंडर से निकला है जिसका अर्थ होता है 'कार्य का उत्तरदायित्व लेना'।

---

* सहायक आचार्य, वाणिज्य महाविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

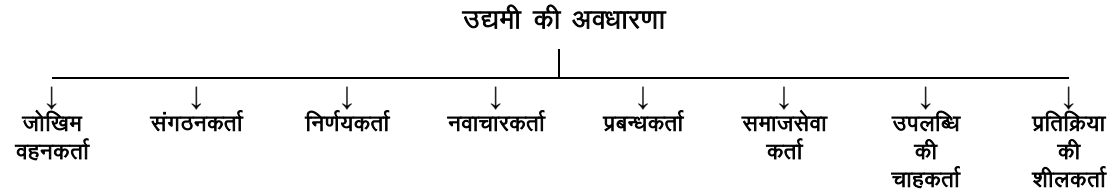

महिला उद्यमी

महिला उद्यमी से आशय महिला जनसंख्या के उस भाग से है जो उद्यमिता क्रियाओं में संलग्न है। महिला उद्यमी उपक्रम की स्वामी होते हुए उसका नियंत्रण करती है तथा उपक्रम की पूंजी में 51 प्रतिशत का अंश धारण किए हुए हैं तथा उपक्रम में कार्यरत महिला कर्मचारियों की संख्या न्यूनतम 51 प्रतिशत है।

शोध की आवश्यकता

उद्यमिता महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने एवं स्वतंत्रता से कार्य करने में सहायक है। उद्यमिता के विकास में महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होने के बावजूद भी उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो कि महिला उद्यमियों के विकास में एक प्रमुख बाधा है तथा सरकार द्वारा इन बाधाओं को दूर करने के लिए महिला उद्यमियों के विकास हेतु किये गये कार्यों की जानकारी प्राप्त करना ही शोध की प्रमुख आवश्यकता रही है।

शोध उद्देश्य

- महिला उद्यमी का आर्थिक विकास में भूमिका का अध्ययन करना।
- महिला उद्यमी को प्रभावित करने वाली चुनौतियों का अध्ययन।
- मानव विकास लक्ष्य में महिला उद्यमी की सहभागिता का अध्ययन।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समकों पर आधारित है जो पुस्तकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, शोध लेख, इन्टरनेट का प्रयोग किया गया है।

आर्थिक विकास में महिला उद्यमी की भूमिका

महिलाऍं सूक्ष्म उत्पादन से वृहद उत्पादन क्षेत्रों में तेजी से प्रवेश कर रही हैं एवं उत्पादन वृद्धि व रोजगार सृजन के माध्यम से देश के आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

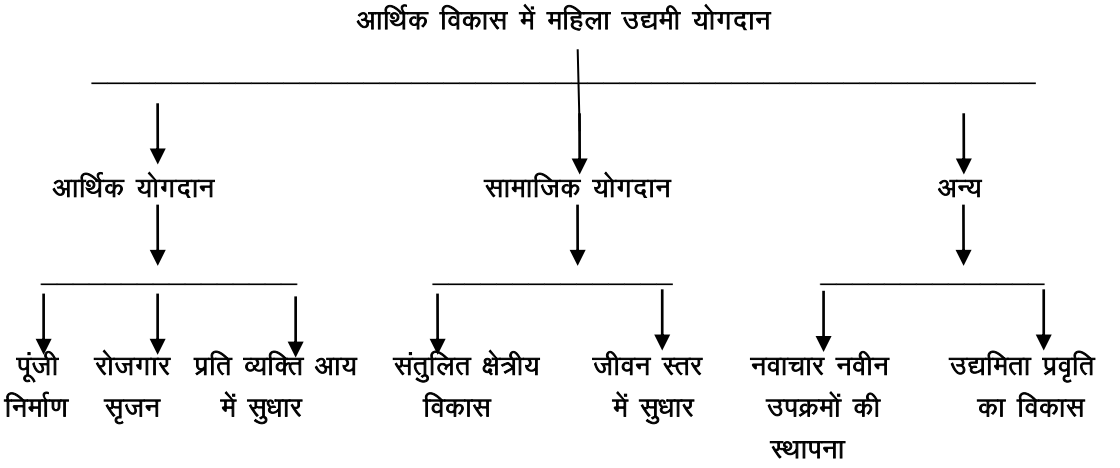

- **पूंजी निर्माण को प्रोत्साहनः** रेजर नस्कर्ट ने लिखा है कि ''विकासशील देशों में उद्यमी ही पूंजी के अभेद्य दुर्ग को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है तथा पूंजी निर्माण में आर्थिक शक्तियों को गति प्रदान करता है।'' महिला उद्यमियों द्वारा अपनी व्यक्तिगत क्रियाओं से छोटी–2 बचतों एवं निवेश कर आर्थिक विकास के लिए पूंजी की दर से वृद्धि करती हैं।
- **प्रति व्यक्ति आय में सुधारः** भारत में महिला उद्यमी भी अब हर अवसरों का फायदा उठाती रही हैं। वे माल एवं सेवाओं के रूप में भूमि, श्रम और पूंजी जैसे निष्क्रिय संसाधनों को राष्ट्रीय आय और धन में परिवर्तित करते हैं। वे देश के शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने में मदद करते हैं जो आर्थिक विकास को मापने का महत्वपूर्ण मापदण्ड है।
- **रोजगार सृजनः** महिला उद्यमी केवल एक रोजगार ही नहीं बल्कि नये रोजगार के अवसरों को खोज कर नये उपक्रम स्थापित करती हैं जिससे न केवल महिला उद्यमी को बल्कि अन्य कई लोगों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से रोजगार मिलता है।

चुनौतियां

जब एक महिला उद्यमिता के क्षेत्र में कदम रखती है तो उसे अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

- **पुरूष समकक्षों के खिलाफ प्रतिस्पर्धाः** बहुत लम्बे समय से पुरूष उद्यमिता के क्षेत्र में हावी रहे हैं। समय के साथ–2 महिलाएं भी इस क्षेत्र में आ रही हैं लेकिन अभी भी उनको एक लम्बा रास्ता तय करना है। विश्व में भारत तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट–अप आधार है। पिछले साल 1000 नए स्टार्ट–अप जोड़े गए, फिर भी भारत में महिला स्टार्ट–अप संस्थापकों का प्रतिशत औसतन 11 रहा है।
- **सीमित धनः** किसी भी व्यवसाय को प्रारम्भ करने में धन बहुत महत्वपूर्ण होता है। भारतीय महिलाओं के पास उनके नाम पर सम्पत्ति नहीं होने से पैसों का अभाव रहता है। उन्हें पैसों की कमी के कारण ऋण के लिए आवेदन करते समय एक समस्या का सामना करना पड़ता है। यह सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक समस्या है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट में दिखाया गया है कि जो महिला बिजनेस चलाती है, उसे पुरूषों की तुलना में बहुत फंडिंग मिलती है।
- **न्यूनतम समर्थनः** जब एक महिला व्यवसाय की दुनिया में अपना पॉव रखती है तो उसे बहुत सहायता की आवश्यकता होती है। महिलाएं अक्सर अपने सपोर्ट के लिए अनुभवी गुरू और मॉडल ढुंढती हैं लेकिन उन्हें गाईड करने वाला कोई नहीं होता है। महिलाओं के लिए व्यवसाय का प्रबन्ध करना और भी मुश्किल हो जाता है जब उनके परिवार के सदस्य एवं दोस्त कुछ घरेलू और पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेने के लिए कदम नहीं बढ़ाते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसे क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना और भी मुश्किल हो जाता है जब पहले से ही आदमी का प्रभुत्व होता है।
- **शिक्षा की कमीः** यूनिस्को की शिक्षा रिपोर्ट के तहत देश की 68 प्रतिशत महिलाएं अनपढ़ हैं। शिक्षा के अभाव में महिला उद्यमियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। जब महिला के सामने व्यवसायिक विकास, खातों का निर्धारण, पैसों के मामलों को समझना और कम्पनी को चलाने से सम्बन्धित कई मामले आते हैं तो शिक्षा, कौशल, सूचना एवं अनेक आवश्यक संसाधनों की कमी के कारण वह व्यवसाय में सफल नहीं हो पाती हैं।
- **कार्य–जीवन संतुलनः** महिलाओं से सभी को उम्मीद होती है कि वह अपने परिवार की देखभाल की भूमिका का निर्वाह करें। व्यवसाय करने का मतलब कि लम्बे समय तक व्यवसाय को अपना समय देना होता है। अतः महिलाओं के लिए अपने परिवार एवं व्यवसाय दोनों में संतुलन करना एक समस्य बन जाती है। कामकाजी माताओं को उनके बच्चों की देखभाल में बहुत समय एवं ऊर्जा लगती है जिससे उन्हें अक्सर कम प्राथमिकता वाले व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक पाबंदीः** भारतीय समाज एवं संस्कृति में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय रही है। पुरूष प्रधान समाज की सोच के कारण महिलाएँ अपने विकास की धारा में पिछड़ गई हैं। इस सबके पीछे हमारी सामाजिक बंधनों, रीति–रिवाजों, रूढ़िवादी परम्पराओं एवं धार्मिक अंधविश्वासों में बंध कर रह गई है। इन्हीं सब सामाजिक बंधनों के कारण महिला उद्यमी को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रतिकूल पर्यावरणः** पुरूषों का समाज में वर्चस्व है। महिला उद्यमियों के साथ व्यावसायिक पुरूष व्यावसायिक संबंध बनाने के लिए इच्छुक नहीं हैं। पुरूष महिला उद्यमियों को आम तौर पर प्रोत्साहित नहीं करते हैं।
- **सीमित पर्यावरणः** पुरूषों की तुलना में भारत की महिलाओं की गतिशीलता विभिन्न कारणों से अत्याधिक सीमित है। जब एक अकेली महिला को कमरा किराये मांगने पर उसे संदेह की नजर से दखा जाता है वैसे ही उद्यमी महिलाओं के प्रति अपमानजनक रवैया रखा जाता है तथा समाज उसे उद्यम शुरू करने का विचार छोड़ने के लिए मजबूर करता है।

निष्कर्ष

उद्यमिता किसी भी राष्ट्र में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया का एक आधारभूत तत्व है। उद्यमिता करने वाली महिलाओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। अतः आज पूरे विश्व में उद्यमिता विशेषकर महिला उद्यमिता को सामाजिक व संधारणीय विकास के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। महिलाओं में उद्यमशीलता विकास के माध्यम से जहॉ एक ओर महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण होगा वहीं दूसरी ओर परिवार, समाज व अंततः राष्ट्र के निर्माण में सहभागी बन सकेंगी। आज उद्यमिता में महिलाओं के योगदान को देख कर लगता है कि महिलाओं ने गृहणी के रूप से बाहर निकल कर अपनी एक अलग पहचान बनाई है लेकिन यहॉ तक पहुंचना महिला उद्यमी के लिए आसान नहीं था। उन्होंने बहुत ही मुश्किलों का सामना किया है और आज भी कर रही हैं। कार्यक्रम के दृष्टिकोण एवं समाज की मानसिकता के कारण भारत में महिला उद्यमिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सामाजिक मानसिकता एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन कर आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए महिलाओं के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। महिला उद्यमियों को प्रेरित करने और उनकी सहायता के लिए हर सम्भव प्रयास किए जाने चाहिएं तथा प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना करके महिलाओं को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कार्य–ज्ञान का स्तर, जोखिम उठाने की क्षमता को बढ़ाकर उनकी उन्नति कर सकें। निसंदेह महिलाओं की उद्यमियों की गुणवत्ता का उत्पादन किया जा रहा है। उद्यमशीलता के क्षेत्र में सरकार द्वारा उठाये गये कार्य एवं कदम से केवल एक छोटा वर्ग लाभान्वित हुआ है और इसमें और अधिक करने की आवश्यकता है। महिलाओं के लिए उद्यमशीलता जागरूकता और कौशल विकास के लिए प्रभावी कदम उठाये जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुधा, जी.एस. 2007, उद्यमिता के मूलतत्व, आर.बी.एस. प्रकाशन, जयपुर।
2. नौलखा डॉ. आर.एल., उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय प्रबन्ध, आर.बी.डी. पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर।
3. अग्रवाल, आर.सी., 2007, उद्यमिता एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. Sharma, Dr. Ranjana "Women entrepreneurs in India, ISSN: 2230-9926.
5. Lakshmi, C.S. 2002 "Development of women entrepreneurship in India" Discover Publishing House, New Delhi.
6. संजय कांति दास, (2012) ''इन्टरप्रेन्योरियन एक्टिविटिज ऑफ सैल्फ हैल्प ग्रुप्स टुवर्डस विमेन एंपावरमेंट'' जनरल ऑफ इन्टरप्रेन्योरशिप मैनेजमेंट।
7. Dr. G. Malyodri (2014) "Role of women entrepreneurs in the Economic Development of India."

8. Singh, Kamala (1992), Women Entrepreneurs, New Delhi: Shish Publishing House.

9. Gupta, MS Sweety (2015), Opportunities and Challenges Faced by Women Entrepreneurs in India, IOSR Journal of Business and Management. ISSN: 2319-7668, Volume 17.

10. S.K. Dhameja, "Women Entrepreneurs: Opportunities Performance, Problems, Deep Publications Pvt. Ltd., New Delhi, P. 9.

11. Mustapha, Mazlina, "Challenges and Success Factors of Female Entrepreneurs: Evidence from a Developing Country, IRMM, ISSN: 2146-4405.

12. Salleh, Z., Osman, M.H.M. (2007), Goal orientations and typology of women entrepreneurs, Journal of Humanity. 10, 24-37.

13. छपेरा, प्रियंका (2017), ''एक नवप्रवर्तक के रूप में महिला उद्यमी की भूमिका'' IRJMST, Vol. 8, ISSN-2250-1959.

14. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश, ''रिसर्च मैथडॉलॉजी'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर

15. नौलखा, डॉ. आर.एल. ''उद्यमिता के आधारभूत तत्व'', आर.बी.पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर।

16. जैन, डॉ. पी.सी., ''उद्यमिता के मूलाधार'' रमेश बुक डिपो, जयपुर।

17. डॉ. महबूब ऑलम, ''भारतीय महिला उद्यमिता की समस्याएं'' Journal of Socio-Education & Cultural Research, Vol. - 2

इन्टरनेट वेबसाइट्स

18. www. Sodhgangotri.inflibnet.ac.in

19. www.google.com

20. www.wikipedia.com

21. https%//womenentrepreneursaccountinginhindi.com

❖◆❖